एचएयू में किसानों हेतु ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से

हिसार, 15 जून (देवानंद) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं।

बाग लगाने से पूर्व मिट्टी व पानी की जांच ज़रूर करवाएं किसान : प्रो. काम्बोज

हिसार, 15 जून (राजकुमार) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की

मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

किसान ऐसे लें मिट्टी के नमूने : मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं।

एचएयू कुलपति की सलाह, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार

मृदा नमूने में सावधानी के साथ ये जानकारी भी जरूरी : मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर निम्नलिखित जानकारी देना बहुत जरूरी है। इनमें से किसान का नाम, खेत का खसरा नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साधन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की ढलान एवं किस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक्त जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट व खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने मे सहायक सिद्ध होती है। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सूखा देते हैं, जो गलत है।

एचएयू कुलपति की सलाह, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रो. काम्बोज

गांव कनेक्ट न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

किसान ऐसे लें मिट्टी के नमूने

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से 15 सैं.मी., दूसरा 15 से 30 सैं.मी., तीसरा 30 से 60 सैं.मी., चौथा 60 से 90 सैं.मी., पांचवां 90 से 120 सैं.मी., छठा 120 से 150 सैं.मी. और सातवां 150 से 180 सैं.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

मृदा नमूने में सावधानी के साथ ये जानकारी भी जरूरी

मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर निम्नलिखित जानकारी देना बहुत जरूरी है। इनमें से किसान का नाम, खेत का खसरा नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साधन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की ढलान एवं किस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक्त जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट व खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने मे सहायक सिद्ध होती है। यदि खेत की मिट्टी में अंतर हो तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर खाद अभी डाली हो या जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो। उन्होंने कहा कि किसान हाल ही में भूमि सुधारक रसायन या उर्वरक प्रयोग किए गए खेत से भी नमूना न लें। नमूनों को खाद, राख या गोबर के संपर्क में न आने दें व नमूनों को उर्वरक वाले बोरों पर न रखें। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सुखा देते हैं, जो गलत है।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं। किसान इस प्रशिक्षण से <http://meet.google.com/mmo-jgso-ikn> गुगल मीट लिंक से जुड़ सकते हैं।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा

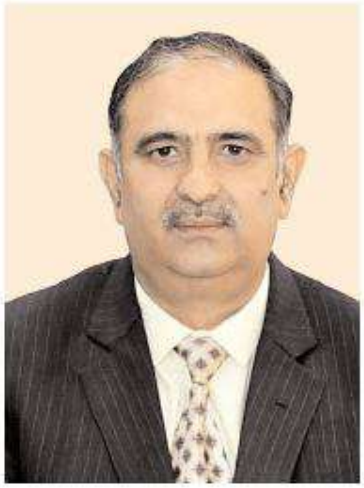

की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

किसान ऐसे लें मिट्टी के नमूने

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह

एचएयू कुलपति की सलाह, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार

से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से 15 सैं.मी., दूसरा 15 से 30 सैं.मी., तीसरा 30 से 60 सैं.मी., चौथा 60 से 90 सैं.मी., पांचवां 90 से 120 सैं.मी., छठा 120 से 150 सैं.मी. और सांतवां 150 से 180 सैं.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच करवाएं किसान : कुलपति

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बी. आर. कम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

एचएयू में किसानों के लिए ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से

सिटी पल्स न्यूज़, हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

पल पल न्यूज: हिसार, 15 जून। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुड़कर लाभ उठाएं।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसानः प्रो. काम्बोज

पल पल न्यूज: हिसार, 15 जून। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की

जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से 15 सैं.मी., दूसरा 15 से 30 सैं.मी., तीसरा 30 से 60 सैं.मी., चौथा 60 से 90 सैं.मी., पांचवां 90 से 120 सैं.मी., छठा 120 से 150 सैं.मी. और सांतवां 150 से 180 सैं.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार | सिरसा टुडे

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे। उन्होंने किसानों से आह्वान किया कि किसान ज्यादा से ज्यादा संख्या में इस ऑनलाइन प्रशिक्षण से जुडक़र लाभ उठाएं।

किसान इस प्रशिक्षण से http://meet.google.com/mmo-jgso-ikn गुगल मीट लिंक से जुड़ सकते हैं।

बिना वैज्ञानिक परामर्श के फलदार पौधों के बाग न लगाएं : कुलपति

हिसार/15 जून/रिपोर्टर

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बीआर काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिएं। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सूखा देते हैं, जो गलत है।

हकृवि में कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम 21 से

हिसार. चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए ऑनलाईन माध्यम से 21 जून से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाईन गूगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं : प्रो. काम्बोज

एचएयू कुलपति प्रो. काम्बोज बोले, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार

समस्त हरियाणा न्यूज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

मृदा नमूने में सावधानी के साथ ये जानकारी भी जरूरी

मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर निम्नलिखित जानकारी देना बहुत जरूरी है। इनमें से किसान का नाम, खेत का खसरा नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साधन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की ढलान एवं किस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक्त जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट व खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने मे सहायक सिद्ध होती है। यदि खेत की मिट्टी में अंतर हो तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर खाद अभी डाली हो या जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो। उन्होंने कहा कि किसान हाल ही में भूमि सुधारक रसायन या उर्वरक प्रयोग किए गए खेत से भी नमूना न लें। नमूनों को खाद, राख या गोबर के संपर्क में न आने दें व नमूनों को उर्वरक वाले बोरों पर न रखें। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिये। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सूखा देते हैं, जो गलत है।

नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें : प्रो. शर्मा

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार (समस्त हरियाणा न्यूज)। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

हिसार, (नित्य शक्ति टाइम्स) :चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है। मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना ज़मीन की सतह से 15 सैं.मी., दूसरा 15 से 30 सैं.मी., तीसरा 30 से 60 सैं.मी., चौथा 60 से 90 सैं.मी., पांचवां 90 से 120 सैं.मी., छठा 120 से 150 सैं.मी. और सांतवां 150 से 180 सैं.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक भास्कर	16-06-2021	03	3-4

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसानः प्रो.बीआर काम्बोज

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के वीसी प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है, ताकि पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिए जा सकते हैं। इसके लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा ओगर से आसानी से लिए जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 और 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना जमीन की सतह से 15 सेमी., दूसरा 15 से 30 सेमी., तीसरा 30 से 60 सेमी., चौथा 60 से 90 सेमी., पांचवां 90 से 120 सेमी., छठा 120 से 150 सेमी. और सांतवां 150 से 180 सेमी तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	16-06-2021	02	07-08

बाग लगाने से पहले मिट्टी, पानी की जांच करवाएं : प्रो. कांबोज

माई सिटी रिपोर्टर

एचएयू के कुलपति ने किसानों के लिए जारी की सलाह

हिसार। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर कांबोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं।

किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते। क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए।

ऐसे लें मिट्टी के नमूने

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि पहला नमूना जमीन की सतह से 15 सेंटीमीटर, दूसरा 15 से 30 सेंटीमीटर, तीसरा 30 से 60 सेंटीमीटर, चौथा 60 से 90 सेंटीमीटर, पांचवां 90 से 120 सेंटीमीटर, 20 से 150 सेंटीमीटर और सातवां 80 सेंटीमीटर तक की गहराई अलग-अलग रख लेना चाहिए।

प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए। यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें। यदि खेत की मिट्टी में अंतर हो तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर खाद अभी डाली हो या जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो। किसान हाल ही में भूमि सुधारक रसायन या उर्वरक प्रयोग किए गए खेत से भी नमूना न लें।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक जागरण, पंजाब केसरी	16-06-2021	04, 04	1-2, 7-8

विज्ञानी कपास उत्पादन की तकनीकों से करवाएंगे रूबरू

जासं, हिसार : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी। तीन दिवसीय प्रशिक्षण में भाग लेने वाले प्रतिभागियों को ई-सर्टिफीकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

'ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से'

हिसार, 15 जून (पंकेस): चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय में किसानों के लिए 21 जून से ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
दैनिक ट्रिब्यून	16-06-2021	07	1-2

'मिट्टी, पानी की जांच कराएं किसान'

हिसार (निस) : चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बीआर काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। क्योंकि बागवानी किसानों की आय बढ़ाने में मददगार साबित हो रहे हैं। कुलपति प्रो. बीआर कम्बोज ने किसानों को सलाह देते हुए कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते, क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। मृदा विज्ञान के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज शर्मा ने बताया कि मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
अमर उजाला	16-06-2021	01	01

myCity

न्यूज कैप्सूल

ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 से

हिसार (ब्यूरो)। हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (एचएयू) में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम किया जाएगा। सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक (प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गूगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में जानकारी दी जाएगी। प्रतिभागियों को ई-सर्टिफिकेट संस्थान की ओर से दिए जाएंगे।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टुडे न्यूज	16.06.2021	--	--

एचएयू में किसानों के लिए तीन दिवसीय ऑनलाइन कपास प्रशिक्षण 21 जून से

हिसार। चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में किसानों के लिए ऑनलाइन माध्यम से तीन दिवसीय कपास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया जाएगा। यह जानकारी देते हुए सायना नेहवाल कृषि प्रौद्योगिकी प्रशिक्षण एवं शिक्षण संस्थान के सह-निदेशक(प्रशिक्षण) डॉ. अशोक गोदारा ने बताया कि इस प्रशिक्षण में किसान ऑनलाइन माध्यम से गुगल मीट लिंक के माध्यम से जुड़ सकते हैं। इस प्रशिक्षण के दौरान किसानों को कपास उत्पादन की विभिन्न तकनीकों व उनके प्रबंधन के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी जाएगी।

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

लोक संपर्क कार्यालय

समाचार पत्र का नाम	दिनांक	पृष्ठ संख्या	कॉलम
हिसार टुडे न्यूज	16.06.2021	--	--

बाग लगाने से पहले मिट्टी व पानी की जांच अवश्य करवाएं किसान : प्रो. बी.आर. काम्बोज

एचएयू कुलपति की सलाह, बागवानी आय बढ़ाने में मददगार

टुडे न्यूज | हिसार

चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर बी.आर. काम्बोज ने कहा कि किसान बाग लगाने से पहले बेहतर उत्पादन हासिल करने के लिए मिट्टी व पानी की जांच वैज्ञानिकों की सलाह अनुसार करवाएं और उसी अनुसार बाग लगाएं। किसानों को सलाह देते हुए उन्होंने कहा कि कई बार किसान फलदार पौधों के बाग बिना वैज्ञानिक परामर्श के लगा लेते हैं, लेकिन समय आने पर वे उस बाग से वांछित लाभ नहीं ले पाते क्योंकि पौधों में आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति न होने के कारण उनसे उत्पादन कम मिल पाता है। इसलिए यदि मिट्टी में किसी तत्व की कमी हो तो उसकी पूर्ति खाद व उर्वरकों द्वारा की जानी चाहिए। उर्वरकों की मात्रा का निर्धारण करते समय मिट्टी की उपजाऊ शक्ति तथा फसल द्वारा अवशोषित किये गये पोषक तत्वों की मात्रा को ध्यान में रखना आवश्यक है।

मृदा विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. मनोज कुमार शर्मा ने बताया कि बाग लगाने से पहले मिट्टी की जांच बहुत जरूरी है ताकि जांच से पता चल सके कि मिट्टी बाग लगाने के लिए सही है या नहीं। परीक्षण से मृदा की समस्याएं जैसे अम्लीयता, क्षारीयता तथा लवणता इत्यादि का भी पता लगता है तथा यदि कोई समस्या है तो उसमें सुधार के लिए सुझाव दिये जा सकते हैं। मिट्टी की जांच के लिए मिट्टी के नमूने खेत से सही ढंग से लिए जाने चाहिए। बाग के लिए मिट्टी का नमूना लेने का तरीका फसलों के नमूने लेने के तरीके से अलग होता है। मिट्टी के नमूने बरमे या मृदा औगर से आसानी से लिये जा सकते हैं। वैज्ञानिकों के अनुसार सबसे पहले 2 मीटर गहरा गड्ढा खोदना चाहिए। उसके बाद सतह से 15, 30, 60, 90, 120, 150 तथा 180 सेंटीमीटर की गहराइयों पर खुरपी से निशान लगाने चाहिए ताकि नमूने लेने में आसानी हो। उन्होंने बताया कि पहला नमूना जमीन की सतह से 15 सें.मी., दूसरा 15 से 30 सें.मी., तीसरा 30 से 60 सें.मी., चौथा 60 से 90 सें.मी., पांचवां 90 से 120 सें.मी., छठा 120 से 150 सें.मी. और सातवां 150 से 180 सें.मी. तक की गहराई से लेकर अलग-अलग रख लेना चाहिए। प्रत्येक नमूना आधा किलोग्राम के लगभग होना चाहिए। वैज्ञानिकों ने बताया कि यदि कोई कठोर या रोड़ी वाली परत जमीन में आ जाए तो उसका नमूना अलग से लेकर परत की गहराई और मोटाई नोट करनी चाहिए। सभी नमूनों को साफ कपड़े या पॉलिथीन की थैलियों में डालें और हर नमूने पर ध्यान से लेबल लगाएं। लेबल पर नमूने की गहराई लिखें व एक लेबल थैली के अंदर रखें एवं एक बाहर बांध दें।

मृदा नमूने में सावधानी के साथ ये जानकारी भी जरूरी

मृदा के नमूने के साथ भेजे जाने वाले सूचना पत्र पर निम्नलिखित जानकारी देना बहुत जरूरी है। इसमें से किसान का नाम, खेत का खसरा नंबर या नाम, नमूना लेने की तिथि, सिंचाई का साधन, खेत की कोई भी समस्या यदि है तो वह भी, पत्र व्यवहार का पूरा पता, भूमि की ढलान एवं किस प्रकार के पौधे खेत में हैं या लगाना चाहते हैं। उक्त जानकारी मिट्टी की रिपोर्ट व खाद संबंधी सिफारिश को अधिक लाभकारी बनाने में सहायक सिद्ध होती है। यदि खेत की मिट्टी में अंतर हो तो मिट्टी का नमूना अलग-अलग खेत से लेना चाहिए। मृदा नमूना खेत के उस स्थान से न लें जहां पर गोबर खाद अभी डाली हो या जहां गोबर खाद का पहले ढेर लगाया गया हो। उन्होंने कहा कि किसान हाल ही में भूमि सुधारक रसायन या उर्वरक प्रयोग किए गए खेत से भी नमूना न लें। नमूनों को खाद, राख या गोबर के संपर्क में न आने दें व नमूनों को उर्वरक वाले बोरे पर न रखें। उन्होंने कहा कि नमूनों को हवा व छाया में ही सुखाना चाहिए। कई किसान नमूनों को गर्म करके या धूप में सुखा देते हैं, जो गलत है।